M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. Ref.
Ser. 996

Title: Dwadas Akshar Mantra

996

Complete

C

	Dwadas Akshar Mantra		Title
			Author
			Editor
8K			Year, Vols.
			Publisher
996			Remarks

॥ॐ गणेशाय नमः॥ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमंत्रशक्तिगणपतिमंत्रस्य
गणक ऋषिः निचृद्गायत्री छंदः शक्तिगणपतिर्देवता गँ बीजं स्वा
हा शक्तिः सर्वाभीष्टमनोरथसिध्यर्थे जपे विनियोगः॥ ह्रूँ गाँ हृदयाय नमः
ह्रीं गीं शिरसे स्वाहा॥ शिखायै वषट्॥ ह्रैं गैं कवचाय हुं॥ ह्रौं गौं नेत्रत्रयाय
वषट्॥ ह्रः अस्त्राय फट्॥ अंगुलिषु एवं न्यसेत्॥ अथ ध्यानं॥ सुधासमोनि
धिमध्ये ध्येरत्नराजीवसन्निभं॥ कोटिबालार्कसंकाशं पाशमंकुशमेव
च धारयत्स्वचचषकं पिबंतं चेक्षुजं रसं॥ भुजादंडेन चषकं वामां॥ कल्पि
तयान्वितं॥ शक्तिः तया कमलधारिण्या ध्यात्वा विघ्नं समर्चयेत्॥ उपरित
न दक्षिणां वामकरयोः पाशांकुशौ॥ तदधस्तु दक्षिणे इक्षुरसपूर्णं चषकं॥ धा
रयंतं चषकं तेक्षुरसं भुजादंडेन पिबंतं ध्यायेत्॥ ६॥ इत्येवं ध्यात्वा पर
गणेशमंत्रं ह्रीं गं ह्रीं १००८ जपः॥ पश्चात् पिंडदेवं शक्तिसहितं आवाहयाद्य

दिक्षु चारैः प्रपूजयेत्॥ वामायै नमः॥ ज्येष्ठायै नमः॥ काल्यै नमः॥ रौद्र्यै नमः॥
वर्ण्यै नमः॥ बलप्रमथिन्यै सर्वभूतमरोन्म्यै नमः॥ इति॥ द
पूजयेत्॥ प्रमोदाय नमः॥ सन्मुखाय नमः॥ दुर्मुखाय नमः॥ विघ्नविनाशाय
नमः॥ नमस्ति चतुर्दिक्षु॥ ब्राह्म्यै नमः॥ माहेश्वर्यै नमः॥ कौमार्यै नमः॥
वैष्णव्यै नमः॥ ऐन्द्र्यै नमः॥ चामुण्डायै नमः॥ महालक्ष्म्यै
नमः इति पूजयेत्॥ लोकपालाश्च खादिक्षुः पूजयेत्॥ परमेश्वरलक्ष्म्यै
॥६॥ ॥७॥ ॥६॥ ॥७॥ ॥६॥ ॥६॥